आज का पुरुषार्थ 29 July 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" हमें सम्पूर्ण बनना है .. तो अपने असली स्वरुप को देखते चले .. हम गॉडली स्टूडेंट है .. अपने स्वरुप में खो जायें "*

हमें स्वयं भगवान पढ़ाने आये, हम godly student है और highest पढ़ाई पढ़ रहे है।

हमारे देश में बहुत ऐसी **पद** है जिसके लिए highest पढ़ाई पढ़े जाते है। उन्हें कितना नशा रहता है, मैं जाकर अब यह बनुंगा।

हम भी भगवान से पढ़ रहे है, **highest पढ़ाई।** वर्ल्ड administrative सर्विस। इस राजयोग से हम विश्व पर राज करने की कला सीखते है।

ऐसे कोई education नहीं होती जिसमें राज करने की कला सिखाई जाती हो! तो हमें नशा रहना चाहिए कि बस पढ़ाई पूरी हुई और हम जाकर बने **प्रिंस प्रिंसेस।**

विश्व महाराजन, बहुत बड़ा पद है। यह खुशी हमें पढ़ाई के लिए चुस्त कर देती है। यह खुशी हमारे सभी व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देती है।

हम सचमुच कितना सुन्दर विद्या प्राप्त कर रहे है। कभी सोचा था कि भगवान सम्मुख बैठकर पढ़ायेंगे?

कहीं ऐसा तो नहीं कि भगवान पढ़ाते हो और हम पढ़ते ही न हो? या हम सोते हो? या हमें पढ़ाई में रूचि ही न हो? तब भला हमारा भविष्य सुन्दर कैसे बनेगा?

हम इस पढ़ाई द्वारा अपने को पावन बनाते चले। हमें बाबा पुज्य बना रहे है। जो जितने ज्यादा पवित्र उतने ही परम पूज्य है।

देखिये हमारे पुज्य रूप को सब कितने रिगार्ड से देखते है जितने हम पुज्य बनते जायेंगे संसार के सभी आत्मायें उतना ही प्यार और सम्मान के नजर से देखने लगेंगी।

और ऐसी पुज्य आत्माओं को ही परमात्मम प्यार प्राप्त होता है। क्योंकि भगवान के लिए सबसे बड़ा आकर्षण **स्वच्छता और पवित्रता है।**

परन्तु यह स्वच्छता केवल बाहर की नहीं। यह स्वच्छता है मन की, यह स्वच्छता है बुद्धि की। और इसका स्वरूप है पवित्रता।

कोई भी विकार न रहे। विकारी संकल्प न रहे। विकारी भावनायें न रहे। हमारी दृष्टि पवित्र हो जाये, आत्मिक हो जाये। हमारे चित्त में पवित्रता के वायब्रेशन्स वहने लगे।

हमारे चित्त शीतल हो जाये। **कर्मेन्द्रियाँ और अंग अंग शीतल हो जाये।** ऐसे पवित्र आत्मायें ही सम्पूर्ण पुज्य बनती है।

और ऐसी आत्मा के द्वारा भक्ति में भी सबकी कितनी **पालना** होती रहती है! उनकी जड़ मूर्तियों के द्वारा मनोकामनायें पूर्ण होती रहती है।

लोगों को शान्ति और **सफलता** मिलती रहती है। कई बिगड़े काम संवारते रहते है। कईयों के विघ्न नष्ट होते रहते है।

यह सब पवित्रता का प्रभाव है। इसलिए अपने **प्युरीटी** को बहुत महत्व देते हुए परम पूज्य बनने का पूरा पूरा पुरुषार्थ करे।

आज सारा दिन यह स्वमान रखेंगे →

" **मैं परम पवित्र हूँ .. परम पूज्य हूँ** "

और अपना पुज्य स्वरुप ....

चाहें .. " **अष्टभुजा धारी देवी हूँ** "

चाहें .. " **सबका पालन कर्ता विष्णु हूँ** "

या ..... " **विघ्नविनाशक गणेश हूँ** "

यह अपना स्वरुप सामने लायेंगे, घन्टे में एक-बार इस feeling के साथ →

" मैं यह हूँ "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org